कौन ढूंढेगा अब तुम्हारा खोटा पैसा?
यह देखो, मुझे मिल गया।
बेटा तुम कितने अच्छे हो। भगवान तुम्हारा भला करे।
पंडितजी ने यद्यपि परिवार नहीं बसाया परन्तु उनके संबंध सभी भाई बहनों के साथ मधुर बने रहे। वे देश भर का दौरा करते और जिन स्थानों पर उनके परिवार वालों के घर होते, अवश्य ही उनसे मिलने जाते। परिवार वालों की आंखें अपार हर्ष से सजल हो जातीं।
एक बार संगठन कार्य से वे मथुरा पहुंचे। दादियों के पास खबर पहुंची तो आह्लाद से फूली न समायीं।
अरे देखो तो अपना वही दुबला पतला, धोती कुर्ता पहनने वाला दीना आया है। कैसा है, कहां घूमता रहता है?